International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 7 No. 2 January – February - 2026

आदिवासी हिंदी कविता का स्वर

डॉ. प्रमोद परदेशी
दादा पाटील महाविद्यालय कर्जत, जिला- अहिल्यानगर (महाराष्ट्र) ४१४४०२
Corresponding Author – डॉ. प्रमोद परदेशी
DOI - 10.5281/zenodo.18654498

सदियो से जंगल में निवास करनेवाली जनजातीयां आदिवासी कहलाती है l जो आदिम अवस्था में रहते है l लेकिन वे मानव संस्कृति एक हिस्सा है l उनकी अपनी संस्कृति, सभ्यता और परंपराए है l उनका जीवन जल, जंगल और जमीन से जुडा हुआ है l आदिवासी साहित्य आदिवासी जीवन और वन सांस्कृतिक साहित्य है l आदिवासी साहित्य आदिवासियों की सांस्कृतिक पहचान का साहित्य है l अस्मिता और आस्तित्व का साहित्य है l आदिवासी कविता में जीवन में भोगा गया सत्य है l इन आदिवासी कवियों में निर्मला पुतुल, सरिता बडाईक, हरिराम मिणा, अनुज लुगुन आदि नाम उल्लेखनीय है l

आदिवासी हिंदी कविता मूलत: जल, जंगल और जमीन से जूडी कविता है l जिसे जीवन की कविता मनना उचित है l आदिवासी जन - जीवन जिन मुलभूत चीजों से हर रोज झुंजता है वही यथार्थ कविता का स्वर बनकर उभारा है l जल , जमीन , पशु , पक्षी , फल.फुल, आदि प्राकृतिक उत्पादन आदिवासी जीवन के महत्वपूर्ण अंग है l आदिवासी जीवन संस्कृति में प्रकृति तथा पर्यावरण सर्वोपरी है l प्रकृति ही आदिवासियों की गौरव, परंपरा और पह्चान है I विकास के नाम पर सभ्य समाज ने आदिवासियों के आस्तित्व पर आक्रमण किया l उन्हें जल, जंगल, जमीन से बेदखल होना पडा I विस्थापन की बडी समस्याने आदिवासी की सांस्कृतिक पहचान मिटा दी l इसी बेचैनी से आदिवासी हिंदी कविता में प्रतिरोध के स्वर को जन्म दिया l आदिवासी हिंदी कविता का प्रमुख स्वर प्रकृति, आदिवासी स्त्री तथा आदिवासी जीवन की पीडा, प्रतिरोध और विस्थापित की त्रासदी रहा है l

विस्थापन की समस्या को ‘अपने घर कि तलाश में ’ कविता में निर्मल पुतुल अभिव्याक्त करती हुई कहती है

“धरती के इस छोर र से उस छोर तक
मुटठी भर सवाल लिये में
दौडती – हांफती – भगती
तलाश राही हू सदियों से निरंतर
अपनी जमीन , आपना घर
अपना होने का अर्थ” [1]

प्रकृति आदिवासी जीवन का आधार हैं । आदिवासी जीवन पूरी तरह से प्रकृति के ऊपर निर्भर होता हैं । उनकी रोजी रोटी,उनका वास्तव्य जंगलों के ऊपर ही निर्भर हैं। जंगलों के बिना वह बेघर हो जाते हैं। जंगल कटाई की वजह से उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं , उनकी पर्यावरणीय संवेदना को आदिवासी कवियों ने अपने काव्य का विषय बनाया। उनके जीवन का यथार्थ उनके काव्य में झलकता हैं। आदिवासी प्रकृति के प्रति सचेत है I पर्यावरण के प्रति गहरा लगाव हैं। वह चूप नही बैठेगा l उसकी लढाई जीवन की लढाई है l अपने अस्तित्व पर आक्रमण होने पर वह पारंपारिक साधनों से लढना चाहते है l जंगल को बचाने के लिये वह क्रोध से धनुष उठाना चाहता है l और उस खोखले विकास का प्रतिरोध करना चाहता है l सभी आदिवासियों को हर संकट के लिये जागृत करना चाहता है l

" वह धनुष उठाएगा
और जंगल के हरेपन के खातीर
जंगल का कवि
मांदर बाजायेगा बांसूरी
चढाकर प्रत्यंचा पर कलम"[2]

आदिवासियों की अज्ञानता का फायदा उठकर सभ्य समाज के ठेकेदारों ने विकास के नाम पर उनके आदीवास पर आक्रमण कर दिया I आदिवासियों के प्रति अनास्था और असंवेदनशीलता से उसे हथियार उठाने के लिए मजबूर किया I लेकिन उसकी अपनी मर्यादाए है I उसके आंखो के सामने सभ्य समाज के ठेकेदारों ने धीरे-धीरे विकास की योजनओं के नाम पर जंगल को उजाडना शुरू किया I प्राकृतिक सौंदर्य नष्ट कर दिया I पानी का उपयोग कंपनियों फैकटरियों के लिए करना शुरू किया I आदिवासी पैसो की ताकद के सामने कमजोर पड गया I

"वह कुबेर चर रहा था पहाडो को
जंगल को
वनस्पतीयों को
जिंवो को
पी रहा था नादियों को, झरनों को
सरोवरों को
झील को, समुद्र को I"[3]

आदिवासी कविता में स्त्री सत्ताक संस्कृति का अस्तित्व बचाने के लिए पुरुषवादी संस्कृति से संघर्ष और मुक्ती का स्वर दिखाई देता है I निर्मल पुतुल की कविता में आदिवासी स्त्री बेचैन है , वह अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए अपनी खुद कि जमीन और खुला आकाश ढूढती है I

" अपनी कल्पना में हर रोज एक ही समय में स्वयं को
हर बेचैनी स्त्री तालाशति है

अपनी एक ऐसी जमीन
जो सिर्फ उसकी अपनी हो
एक अनुभव आकाश I"[4]

अनेक संघर्षो के बावजुद पीडा सहते हुए आदिवासी स्त्री अपना जीवन यापन करती है I उसकी अर्थ वेदना आदिवासी कविता में अंतर्मुख हुई है I

"सपनो को भागती एक स्त्री का पीछा करते
कभी देखा है तुमने उसे
रिश्तो के कुरुक्षेत्र में
अपने आप से लडते I "[5]

आदिवासी स्त्री के अंतर्मन में पीडा गहरी है I उसे मुक्ती के नाम पर हमेशा छला गया I लेकीन वह खामोश है I अपनी वेदना को अकेले में, कर अंधेरे में, संन्नटे में आसू बहाकर अभिव्यक्त करती है , उसकी पीडा की वेदना का अभिव्यक्त स्वर निर्मला पुतुल के 'अपने घर की तलाश में' कविता में दिखाई देता है

" रही चूप चाप सव कुछ सहती
खामोश सदा रही बहाती
छल जिसने तुम्हे तुम्हारी ही
मुक्ती के नाम पर
राही रोती सदा रात के सहारे में
अंधेरे से मुह ढाप
पर सुनी नही किसेने तुम्हारी सिसाकिया I"[६]

आदिवासी कविता में आदिवासी स्त्री की अंर्तवेदना की अभिव्यक्ती है I आदिवासी की अपनी जीवन संस्कृति है, परंपरा है , अनेक वर्षो से वह उसमें निर्वाह कर रही है, वह इसीमें खुश है I प्रकृती के हर रंग में वह रंगाना पसंद करती है I बरसात के मौसम में अपना खेत को हरा भरा होता है I तो सबसे अधिक ख़ुशी मिलती है सरिता बाइडाइक कविता में आदिवासी महिला सावन के महिने में प्राकृतिक सौंदर्य को देखकर अपना आनंद किस प्रकार अभिव्यक्त करती होती है इसका चित्रण किया है I

" घडी –घडी बहरा गरजत है

बरखा जमकर बरसते है
सावन के सिंगार का बीडा
खेत सजा है चारो ओर
मांदर थाप पर
मेरा मन थिरकत है
नदी – नाला पोखर तलैया
रोप खेत डमखच – झूमर।"[7]

आदिवासी स्त्री को अपने गाव का प्राकृतिक सौंदर्य सबसे प्रिय है । वह बदलते प्राकृतिक वातावण में सबसे अधिक खुश है, उसे अभवो कि चिंता नाही है,वह समृद्ध प्राकृतिक परिवेश में सीमित आवश्यकता को पुरा करती है । उसके जिने का आधार प्रकृति है, परंतु अब उसके प्रकृति संपन्न जीवन पर संकट आ गाय है । उसका प्राकृतिक जीवन छीना जा रहा है । वह अधिक पारेशान है । वंदना टेटे की कविता में यह चिंता अभिव्यक्त होती है ।

" चिंतित हू और उदास भी
कि छुट रही है मेरे बच्चो से
बहुत सारी चीजें
बहुत बडी दुनिया
जिन्हें वे शायद नहीं जान न पाए ।"[8]

आदिवासीयो के लिये विस्थापन की समस्या सबसे बडी चुनौती है । विकास के नाम पर प्राकृतिक आवास को छीन कर वहा प्राकृतिक संसाधानो की लुट हो रही है । प्राकृतिक सौंदर्य को कब्रगाह बना दिया गया । खनिज – संपदा का खनन , बडी कम्पानियो की स्थापना और औद्योगिककरण के कारण आदिवासियों को विस्थापित होना पडा । विकास के नाम पर जल, जंगल, और जमीन को छीना गया । आदिवासी संस्कृति समाप्त होने लागी ।

"देखो ! उन्होने आखिर तुम्हें खदेड ही दिया
तुम्हारी जमीन से
तुम्हें नेस्तनाबुत करने के लिए
और तुम चुप हो I"[9]

निष्कर्ष:

आदिवासी हिंदी कविता में आदिवासी का प्रकृति, आदिवासी संस्कृति और आदिवासी जीवन के प्रति गहरा लगाव व्यक्त हुआ है । जो उसकी सांस्कृतिक विरासत है । आदिवासी अपने अस्तीत्व कि पहचान जंगल और अपनी संस्कृति से है । जो मुख्य धारा से अलग है । आदिवासी अस्मिता और अपने अस्तित्व के लिये शोषण ,दमन, अत्याचार और अन्याय का प्रतिरोध और संघर्ष करता है, जो उसासे गैर आदिवासी सभ्य समाज द्वारा विलास के नाम पर छीना जा रहा है । इसके लिए वह जागृत है और विद्रोह करने के लिए तत्पर है । आदिवासी हिंदी कविता का प्रमुख स्वर प्रकृति, आदिवासी स्त्री तथा आदिवासी जीवन की पीडा, प्रतिरोध और विस्थापित की त्रासदी दिखाई देता है ।

संदर्भ:

1. अपने घर कि तलाश में , निर्मला पुतुल, पृ . ०३ प्र . सं. २००४
2. आदिवासी स्वर और नई कविता , संपा रमणीय गुप्ता , पृ .४७
3. रोया नाही था यक्ष , हरीराम मीणा , पृ .२६
4. नागडे कि तरह बजते शब्द , निर्मला पुतुल , पृ . ०९
5. अपने घर की तलाश में , निर्मल पुतुल , पृ . ०१
6. अपने घर की तलाश में, निर्मला पुतुल , पृ . ४३
7. नन्हे सपनों का सुख , सरिता बडाइक, पृ . ३२
8. लोकप्रिय आदिवासी कावितये, वंदना टेटे , पृ . १९०
9. सुबह के इंतजार में , हरिराम मीणा पृ. ४४